Sharab Ki Botal (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 332
Weekly Booklet : 332

तक़रीबन 23 साल पहले का बयान

शराब की बोतल

सफ़हात 20

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ط

शराब की बोतल[1]

दुआए अमीरे अहले सुन्नत : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 18 सफ़ह़ात का रिसाला : "**शराब की बोतल**" पढ़ या सुन ले उसे जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमा और उस की मां बाप समेत बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की ख़िदमते बा बरकत में ह़ाज़िर हो कर एक औ़रत ने अ़र्ज़ की : मेरी जवान बेटी फ़ौत हो गई है, कोई त़रीक़ा इर्शाद हो कि मैं उसे ख़्वाब में देख लूं । आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने उसे अ़मल बता दिया । उस ने अपनी मर्ह़ूमा बेटी को ख़्वाब में तो देखा, मगर इस ह़ाल में देखा कि उस के बदन पर तारकोल (या'नी डामर) का लिबास, गरदन में ज़न्जीर और पाउं में बेड़ियां हैं, येह हैबत नाक मन्ज़र देख कर वोह औ़रत कांप उठी ! उस ने दूसरे दिन येह ख़्वाब ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ को सुनाया, सुन कर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ बहुत मग़्मूम हुए । कुछ अ़र्से बा'द ह़ज़रते

---

[1]... आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के बानी अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के होने वाले मुख़्तलिफ़ ऑडियो बयानात को तह़रीरी सूरत में बनाम "**फ़ैज़ाने बयानाते अ़त्त़ार**" अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के शो'बे "**बयानाते अमीरे अहले सुन्नत**" की त़रफ़ से तरमीम व इज़ाफ़े के साथ पेश किया गया । اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الْکَرِیْم ! उन बयानात में से अब शो'बा "**हफ़्तावार रिसाला मुत़ालआ़**" 09 जून 2000 ई. को होने वाले एक बयान "शराब की बोतल" को रिसाले की सूरत में मन्ज़रे आ़म पर ला रहा है ।

हसन बसरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने ख़्वाब में एक लड़की को देखा, जो जन्नत में एक तख़्त पर अपने सर पर ताज सजाए बैठी है। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को देख कर वोह कहने लगी : "मैं उसी ख़ातून की बेटी हूं जिस ने आप को मेरी हालत बताई थी।" आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : उस के बक़ौल तो तू अज़ाब में थी, आख़िर येह इन्क़िलाब किस तरह आया ? मर्हूमा बोली : क़ब्रिस्तान के क़रीब से एक शख़्स गुज़रा और उस ने मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेजा, उस के दुरूद शरीफ़ पढ़ने की बरकत से **अल्लाह** पाक ने हम पांच सो साठ क़ब्र वालों से अज़ाब उठा लिया। (التذکرۃ باحوال الموتٰی، ص77 ماخوذاً)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

शराब की बोतल

हज़रते उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ عَنْه एक बार मदीनए मुनव्वरह की एक पाकीज़ा गली से गुज़र रहे थे कि एक नौ जवान से आमना सामना हो गया, उस ने कपड़ों के नीचे एक बोतल छुपा रखी थी। हज़रते उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ عَنْه ने पूछा : "ऐ नौ जवान ! येह कपड़ों के नीचे क्या उठा रखा है ?" उस बोतल में शराब थी, नौ जवान को उसे शराब कहने की हिम्मत न पड़ी, उस ने दिल ही दिल में दुआ की : "**या अल्लाह** पाक ! मुझे हज़रते उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ عَنْه के सामने शरमिन्दा और रुस्वा न फ़रमाना, इन के हां मेरी पर्दापोशी फ़रमा ले, मैं तौबा करता हूं आइन्दा कभी शराब नहीं पियूंगा।" इस के बा'द नौ जवान ने अर्ज़ की : "या अमीरल मुअमिनीन ! मैं सिर्के (की बोतल) उठाए हुए हूं।" आप رَضِیَ اللهُ عَنْه ने फ़रमाया : "मुझे दिखाओ !" जब उस ने वोह बोतल आप رَضِیَ اللهُ عَنْه के सामने की और हज़रते उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ عَنْه ने उसे देखा तो वाक़ेई वोह सिर्का था। (مکاشفۃ القلوب، ص27، 28)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ज़रा ग़ौर कीजिये कि जब एक बन्दा बन्दे से डर कर ख़ुलूसे दिल के साथ ताइब हुवा तो **अल्लाह** पाक ने उस की शराब को सिर्के से बदल दिया। इसी त़रह़ अगर कोई गुनाहगार बन्दा अपने गुनाहों पर शर्मसार हो कर तौबा कर लेता है तो **अल्लाह** पाक उस की ना फ़रमानियों की शराब को फ़रमां बरदारी के सिर्के में तब्दील कर देता है। नीज़ येह भी पता चला कि तौबा बिग़ैर ज़बान हिलाए दिल ही दिल में भी की जा सकती है कि ह़दीसे पाक में है : "اَلنَّدَمُ تَوْبَةٌ या'नी शरमिन्दगी तौबा है।" (ابن ماجہ،4/492،حدیث:4252) येह भी मा'लूम हुवा कि हाथ उठा कर ज़बान से दुआ़ मांगना ज़रूरी नहीं बल्कि लैटे लैटे, बैठे बैठे, चलते चलते, ज़बान हिलाए बिग़ैर दिल ही दिल में भी दुआ़ मांगी जा सकती है।

शराब की मज़म्मत पर आयाते मुबारका

يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَ الْمَیْسِرُ وَ الْاَنْصَابُ وَ الْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّیْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۹۰﴾ اِنَّمَا یُرِیْدُ الشَّیْطٰنُ اَنْ یُّوْقِعَ بَیْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَ الْبَغْضَآءَ فِی الْخَمْرِ وَ الْمَیْسِرِ وَ یَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَ عَنِ الصَّلٰوةِ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ﴿۹۱﴾ (پ7،المائدہ:90-91)

आसान तरजमए कुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! शराब और जूआ और बुत और क़िस्मत मा'लूम करने के तीर नापाक शैत़ानी काम ही हैं तो इन से बचते रहो ताकि तुम फ़लाह़ पाओ (या'नी काम्याब हो)। शैत़ान तो येही चाहता है कि शराब और जूए के ज़रीए तुम्हारे दरमियान दुश्मनी और बुग़्ज़ो कीना डाल दे और तुम्हें **अल्लाह** की याद से और नमाज़ से रोक दे तो क्या तुम बाज़ आते हो ?

इस आयते मुबारका के तह्त तफ़्सीरे सिरातुल जिनान में है : इस आयत में शराब और जूए के नताइज और वबाल (या'नी नुक़्सानात) बयान फ़रमाए गए कि शराब ख़ोरी और जूए बाज़ी का ज़ाहिरी दुन्यवी वबाल तो येह है कि इस से आपस में बुग़्ज़ और अ़दावतें (या'नी नफ़्रतें और दुश्मनियां) पैदा होती हैं जब कि ज़ाहिरी दीनी वबाल येह है कि जो शख़्स इन बुराइयों में मुब्तला हो वोह ज़िक्रे इलाही और नमाज़ के अवक़ात की पाबन्दी से मह़रूम हो जाता है। इस से मा'लूम हुवा कि जो चीज़ **अल्लाह** पाक के ज़िक्र और नमाज़ से रोके वोह बुरी है और छोड़ने के क़ाबिल है। (तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पारह : 7, अल माइदह, तह़्तल आयह : 91, 3/26) एक रिवायत में है कि जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ किया कि **अल्लाह** पाक को जा'फ़रे त़य्यार की चार ख़स्लतें पसन्द हैं। सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते जा'फ़रे त़य्यार رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से दरयाफ़्त फ़रमाया : उन्हों ने अ़र्ज़ की, कि एक ख़स्लत तो येह है कि मैं ने कभी शराब नहीं पी, या'नी ह़ुर्मत का ह़ुक्म नाज़िल होने से पहले भी कभी शराब नहीं पी और इस की वज्ह येह थी कि मैं जानता था कि इस से अ़क़्ल ज़ाइल होती है और मैं चाहता था कि अ़क़्ल और भी तेज़ हो। दूसरी ख़स्लत येह है कि ज़मानए जाहिलिय्यत में भी मैं ने कभी बुत की पूजा नहीं की क्यूं कि मैं जानता था कि येह पथ्थर है, न नफ़्अ़ दे सके न नुक़्सान। तीसरी ख़स्लत येह है कि मैं कभी ज़िना में मुब्तला न हुवा क्यूं कि मैं इस को बे ग़ैरती समझता था। चौथी ख़स्लत येह थी कि मैं ने कभी झूट नहीं बोला क्यूं कि मैं इस को कमीना पन ख़याल करता था। (تفسیرات احمدیہ، ص101ملتقطاً)

سُبْحٰنَ اللّٰه ! क्या सलीमुल फ़ित़रत थे। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने फ़रमाया कि अगर शराब का एक क़त़रा कूंएं में गिर जाए फिर उस जगह

www.dawateislami.net

मनारा बनाया जाए तो मैं उस पर अज़ान न कहूंगा और अगर दरिया में शराब का क़त्रा पड़ जाए फिर दरिया ख़ुश्क हो जाए और वहां घास पैदा हो तो मैं उस में अपने जानवरों को न चराऊंगा। (تفسیر نسفی،پ2،البقرۃ،تحت الآیۃ:219،ص113)

शराब की मज़म्मत पर सात फ़रामीने मुस्तफ़ा

﴾1﴿ हज़रते वाइल हज़रमी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि त़ारिक़ बिन सुवैद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने शराब के बारे में दरयाफ़्त किया तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को मन्अ़ फ़रमा दिया। उन्हों ने अ़र्ज़ की : मैं सिर्फ़ दवा के लिये शराब बनाता हूं। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह दवा नहीं बल्कि बीमारी है।

(مسلم،ص845،حدیث:5141)

﴾2﴿ हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शराब पी लेगा 40 दिन तक उस की नमाज़ क़बूल नहीं होगी लेकिन अगर उस ने तौबा कर ली तो **अल्लाह** पाक उस की तौबा क़बूल फ़रमा लेगा। फिर अगर दोबारा उस ने शराब पी ली तो फिर 40 दिन तक उस की नमाज़ क़बूल नहीं होगी लेकिन अगर उस ने तौबा कर ली तो **अल्लाह** पाक उस की तौबा क़बूल फ़रमाएगा। फिर अगर उस ने तीसरी बार शराब पी ली तो फिर 40 दिन तक उस की नमाज़ क़बूल नहीं होगी लेकिन अगर उस ने तौबा कर ली तो **अल्लाह** पाक उस की तौबा क़बूल फ़रमाएगा। फिर अगर चौथी मरतबा उस ने शराब पी ली तो फिर 40 दिन तक उस की नमाज़ क़बूल नहीं होगी लेकिन इस के बा'द अगर उस ने तौबा की तो उस की तौबा क़बूल नहीं होगी[1]

1... शैख़े मुह़क़्क़िक़ शाह अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : चौथी मरतबा शराब पीने के बा'द जो "तौबा क़बूल न होने" का इर्शाद फ़रमाया गया येह गुनाह की संगीनी को बयान करने और डराने के लिये है क्यूं कि दर ह़क़ीक़त अगर सच्ची तौबा की जाए तो **अल्लाह** पाक के फ़ज़्ल से वोह ज़रूर क़बूल होगी। या फिर येह मुराद है कि चौथी मरतबा पीने के बा'द **अल्लाह** पाक उसे तौबा की तौफ़ीक़ ही न देगा बल्कि वोह गुनाह की ढिटाई पर मरेगा। (لمعات التنقیح،6/430،تحت الحدیث:3643)

और उसे नहरुल ख़बाल से पिलाएगा।" रावी से पूछा गया कि नहरुल ख़बाल क्या है ? तो उन्हों ने बताया कि वोह नहर जो दोज़ख़ियों की पीप से जारी होगी। (ترمذی،3/341،حدیث:1869)

﴾3﴿ हज़रते अबू मूसा अश्अरी رَضِیَ اللہُ عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तीन शख़्स जन्नत में दाख़िल न होंगे : शराब की मुदावमत करने (या'नी हमेशा पीने) वाला और क़ातेए रेहूम (या'नी रिश्तेदारी तोड़ने वाला) और जादू की तस्दीक़ करने वाला।"[(1)]

(مسند امام احمد،7/139،حدیث:19586 ملخصًا)

﴾4﴿ हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : दाइमी तौर पर शराब पीने वाला अगर इसी हालत में मर गया तो वोह दरबारे ख़ुदावन्दी में क़ियामत के रोज़ इस तरह आएगा जैसे कि एक बुत परस्त।[(2)] (مسند امام احمد،1/583،حدیث:2453)

﴾5﴿ हज़रते अनस رَضِیَ اللہُ عَنْہ से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक ने शराब के बारे में 10 आदमियों पर ला'नत फ़रमाई : (1) शराब निचोड़ने वाले पर (2) शराब निचुड़वाने वाले पर

1... हज़रते अल्लामा अली क़ारी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ इस हदीसे पाक के इस हिस्से "और जादू की तस्दीक़ करने वाला" के तहत फ़रमाते हैं : इस से मुराद वोह शख़्स है जो जादू की तासीर बि ज़ातिही (या'नी इस में **अल्लाह** के दिये बिग़ैर ख़ुद ब ख़ुद तासीर होने) का क़ाइल हो। (مرقاۃ المفاتیح،7/242،تحت الحدیث:3652)

2... या'नी बिग़ैर तौबा किये शराबी रहता हुवा मरे तो **अल्लाह** पाक उस पर ऐसा नाराज़ होगा जैसा बुत परस्त पर नाराज़ होगा, क़ुरआने करीम में रब तआला ने शराब को बुतों के साथ ज़िक्र किया। नीज़ शराबी नशे में बुत परस्ती करे तो कोई तअज्जुब नहीं कि बे अक़्ल सब कुछ कर लेता है तो शराब बुत परस्ती का ज़रीआ बन सकती है, ग़रज़ कि येह वईद बहुत सख़्त है। (मिरआतुल मनाजीह, 3/337 मुल्तक़तन)

(3) शराब पीने वाले पर (4) शराब उठाने वाले पर (5) उस पर जिस की त़रफ़ शराब उठा कर ले जाई गई (6) शराब पिलाने वाले पर (7) शराब की क़ीमत खाने वाले पर (8) शराब बेचने वाले पर (9) शराब ख़रीदने वाले पर (10) उस पर जिस के लिये शराब ख़रीदी गई हो। (ترمذی، 3/47، حدیث:1299)

﴾6﴿ ह़ज़रते अबू मालिक अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मेरी उम्मत के कुछ लोग शराब पियेंगे और उस का नाम बदल कर कुछ और रखेंगे, उन के सरों पर बाजे बजाए जाएंगे और गाने वालियां गाएंगी। **अल्लाह** पाक उन्हें ज़मीन में धंसा देगा और उन में से कुछ लोगों को बन्दर और सुवर बना देगा। (ابن ماجہ، 4/368، حدیث:4020)

﴾7﴿ ह़ज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** पाक फ़रमाता है : क़सम है मेरी इ़ज़्ज़त की ! मेरा जो बन्दा शराब का एक घूंट भी पियेगा मैं उस को उतनी ही पीप पिलाऊंगा और जो बन्दा मेरे ख़ौफ़ से उसे छोड़ेगा मैं उस को ह़ौज़े क़ुदुस (या'नी जन्नती चश्मे) से पिलाऊंगा। (مسند امام احمد، 8/286، حدیث:22281ملتقطاً)

शराब किसे कहते हैं ?

हर वोह बहने वाली चीज़ (या'नी Liquid) जिस के पीने से नशा (Intoxication) आता हो शराब है, चाहे किसी भी चीज़ से बनाई गई हो।

(फ़तावा रज़विय्या, 25/205 मुलख़्ख़सन)

शराब पीने का हुक्म

शराब पीना सख़्त गुनाहे कबीरा है। (फ़तावा रज़विय्या, 25/101)

शराब पीने की चन्द वुजूहात

﴾1﴿ शराब पीने वाले लोगों के पास उठना बैठना ﴾2﴿ जहालत

www.dawateislami.net

(जैसा कि बा'ज़ लोग येह समझते हैं कि शराब पीने से ग़म दूर हो जाते हैं) ﴾3﴿ नाच गाने की तक़रीबात (Functions) में शिर्कत करना, ख़ास तौर पर Dance clubs में जाना (ऐसी जगहों पर शराब नोशी आ़म पाई जाती है और दूसरों की देखा देखी ख़ुद भी इस गुनाह में मुब्तला होने का ख़त्रा रहता है)।

शराब के नुक़्सानात

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! शराब के बे शुमार तिब्बी और अख़्लाक़ी व मुआ़शरती नुक़्सानात हैं, जिन में से चन्द पेशे ख़िदमत हैं, चुनान्चे

शराब के तिब्बी नुक़्सानात

﴾1﴿ किसी माहिर का कहना है कि शुरूअ़ शुरूअ़ में इन्सानी बदन शराब के नुक़्सान पहुंचाने वाले असरात का मुक़ाबला कर लेता है और शराब पीने वाले को ख़ुशी वाली कैफ़िय्यत महसूस होती है लेकिन जल्द ही इन्सान के अन्दर की बरदाश्त वाली कुव्वत ख़त्म हो जाती है और शराब के नुक़्सान पहुंचाने वाले असरात अपना काम शुरूअ़ कर देते हैं। ﴾2﴿ शराब का सब से ज़ियादा असर जिगर (Liver) पर होता है और जिगर ख़राब होने लगता है। ﴾3﴿ शराब की वज्ह से गुर्दों (Kidneys) पर बोझ ज़ियादा हो जाता है और आख़िर कार गुर्दे फ़ेल हो जाते हैं। ﴾4﴿ शराब की वज्ह से दिमाग़ और मे'दा सूज जाता है जब कि हड्डियां नर्म और कमज़ोर हो जाती हैं। ﴾5﴿ शराब की वज्ह से जिस्म में मौजूद विटामिन्ज़ (Vitamins) भी तेज़ी से ख़त्म होते हैं और साथ ही थकन, सर दर्द, मतली और प्यास की शिद्दत भी बढ़ जाती है। ﴾6﴿ ज़ियादा मिक़्दार में शराब पीने वाले का दिल और सांस लेने का अ़मल भी रुक जाता है और वोह फ़ौरन मौत का शिकार भी हो सकता है।

﴾7﴿ किसी माहिर का कहना है कि 12 से 23 साल की उ़म्र में शराब की आ़दत डालने वालों में से 51 फ़ीसद अफ़राद मर जाते हैं। एक और मश्हूर मुह़क़्क़िक़ का कहना है कि 20 साल की उ़म्र से शराब पीने वाले अक्सर अफ़राद 35 साल से ज़ियादा ज़िन्दा नहीं रहते। (बुराइयों की मां, स. 43, 44 माख़ूज़न)

शराब के अख़्लाक़ी व मुआ़शरती नुक़्सानात

﴾1﴿ हज़ारों अफ़राद शराबियों के हाथों बे क़ुसूर क़त्ल हो जाते हैं। ﴾2﴿ शराबी शौहरों के हाथों बीवियां ज़ुल्मो सितम का निशाना बनती हैं। ﴾3﴿ कई औ़रतें शराबी अफ़राद की त़रफ़ से जिन्सी ज़ियादती का शिकार हो जाती हैं। ﴾4﴿ शराबी वालिदैन की औलाद भी आ़म बच्चों के मुक़ाबले में ज़ियादा बीमार और कमज़ोर होती है। ﴾5﴿ येह भी नुक़्सान होता है कि शराबी शख़्स के घर वाले और दोस्त अह़बाब उस के प्यार, मह़ब्बत, हमदर्दी और ख़ुलूस वग़ैरा से मह़रूम रह जाते हैं।

(तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पारह : 7, अल माइदह, तह़तल आयह : 90, 3/22 मुलख़्ख़सन)

शराब और शराबियों से दूर रहने ही में आ़फ़ियत है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! शराब के बे शुमार नुक़्सानात ही की वज्ह से इस्लाम ने शराब को ह़राम क़रार दिया है और देखा जाए तो कोई भी अ़क़्ल मन्द इन्सान उस चीज़ की त़रफ़ हाथ नहीं बढ़ा सकता जिस के नुक़्सानात बहुत ज़ियादा हों। उम्मत के ख़ैर ख़्वाह, प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰه عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : जो **अल्लाह** पाक और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है वोह ऐसे दस्तर ख़्वान पर न बैठे जिस पर शराब पी जाती हो। (ترمذی،4/366،حدیث:2810) नीज़ एक मरतबा आप صَلَّى اللّٰه عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो लोग दुन्या में

किसी नशा करने वाले के पास आते हैं, **अल्लाह** पाक उन सब को जहन्नम में डाल देगा और वोह जहन्नम में एक दूसरे को आ कर बुरा भला कहेंगे कि तू ने ही मुझे इस जगह पहुंचाया है। (کتاب الکبائر للذہبی، ص95 ملخصاً) इस लिये ऐसी मह़फ़िल या पार्टी वग़ैरा न ख़ुद रखी जाए जहां शराब हो और न ही ऐसी मह़फ़िल या पार्टी में शिर्कत की जाए। अगर ज़ेह्न में येह ख़याल आए कि शराब तो आने वाले ग़ैर मुस्लिमों के लिये रखूंगा, ख़ुद नहीं पियूंगा तो येह मस्अला याद रहे कि किसी ग़ैर मुस्लिम को शराब पिलाना भी ह़राम है और पिलाने वाला सख़्त गुनहगार होगा। (ہدایۃ، 2/398 ملخصاً)

शराब की आ़दत कैसे ख़त्म की जाए ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर किसी की مَعَاذَاللہ शराब पीने की आ़दत बन चुकी है तो उसे इस आ़दते बद से पीछा छुड़ाने के लिये इन तदाबीर को इख़्तियार करना बेह़द मुफ़ीद है : ﴾1﴿ सब से पहले ऐसे दोस्तों और मजलिसों से ख़ुद को दूर कीजिये जहां शराब का इस्ति'माल होता हो। ﴾2﴿ शराब पीने से सच्ची तौबा कर के **अल्लाह** पाक से येह दुआ़ मांगिये कि वोह शराब से हमेशा दूर रहने की तौफ़ीक़ और क़ुव्वत अ़ता फ़रमाए। ﴾3﴿ शराब की आ़दत छुड़ाने के लिये अगर इ़लाज करवाना पड़े तो वोह भी करवाइये। ﴾4﴿ हो सके तो ह़लाल कमाने खाने के इ़लावा जो वक़्त मिले उसे फ़ारिग़ गुज़ारने के बजाए नेकी के कामों मसलन सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त, आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत और मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र कर के गुज़ारिये। ﴾5﴿ अगर कभी शैत़ान दोबारा शराब पीने पर उभारना शुरूअ़ करे तो अह़ादीसे मुबारका में बयान किये गए इन अ़ज़ाबात का तसव्वुर अपने दिल में जमाइये : शराब पियूंगा तो क़ियामत के दिन प्यासा

उठाया जाऊंगा।[1] शराब पियूंगा तो दिल से ईमान का नूर निकल जाएगा।[2] शराब पियूंगा तो दोज़ख़ में फ़िरिश्ते लोहे के गुर्ज़ मारेंगे।[3] शराब पियूंगा तो जन्नत की ख़ुश्बू भी सूंघने को नहीं मिलेगी।[4] शराब पियूंगा तो ला'नत का मुस्तहिक़ ठहरूंगा।[5] शराब पियूंगा तो दोज़ख़ में खौलता हुवा पानी पिलाया जाएगा।[6] शराब पियूंगा तो ख़िन्ज़ीर (Pig) बना दिया जाऊंगा।[7]

तौबा की तरग़ीब

तौबा की बड़ी अहम्मिय्यत है और येह **अल्लाह** पाक का हम पर करम है कि उस ने हमें तौबा जैसी ने'मत अ़ता फ़रमाई है। बन्दा कितना ख़ुश नसीब है कि अगर ब तक़ाज़ाए बशरिय्यत उस से झूट, ग़ीबत, शराब नोशी या कोई और गुनाह सरज़द हो जाए और फिर वोह **अल्लाह** पाक की बारगाह में शरमिन्दा हो कर मुआ़फ़ी मांग ले तो उसे मुआ़फ़ी मिल जाती है। क़ुरआने पाक में तौबा करने की तरग़ीब दिलाई गई है, चुनान्चे **अल्लाह** पाक इर्शाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْۤا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا ؕ

(پ28،التحریم:8)

आसान तरजमए क़ुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** की त़रफ़ ऐसी तौबा करो जिस के बा'द गुनाह की त़रफ़ लौटना न हो।

एक और मक़ाम पर इर्शाद होता है :

---

1 ...مسند امام احمد،5/274،حدیث:15482ملخصاً۔ 2 ...معجم اوسط،1/110،حدیث:341ملخصاً۔

3 ...الترغیب والترہیب،3/182،حدیث:43ملخصاً۔ 4 ...ابن ماجہ،4/62،حدیث:3376ملخصاً۔

5 ...ابن ماجہ،4/64،حدیث:3380ملخصاً۔ 6 ...مسند امام احمد،8/286،حدیث:22281ملخصاً۔

7 ...ابن ماجہ،4/364،حدیث:4020ماخوذاً۔

وَهُوَ الَّذِیْ یَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَیَعْفُوْا عَنِ السَّیِّاٰتِ (پ25،الشوریٰ:25)

आसान तरजमए कुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : और वोही है जो अपने बन्दों से तौबा क़बूल फ़रमाता है और गुनाहों से दर गुज़र फ़रमाता है।

हदीसे पाक में है : اَلتَّائِبُ مِنَ الذَّنْبِ کَمَنْ لَّا ذَنْبَ لَهٗ या'नी गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा है गोया उस ने गुनाह किया ही नहीं। (ابن ماجہ،4/491،حدیث:4250) लिहाज़ा हर इस्लामी भाई और इस्लामी बहन को चाहिये कि वोह तौबा से गफ़्लत न करे।

जब कहा इस्यां से मैं ने सख़्त लाचारों में हूं
जिन के पल्ले कुछ नहीं है उन ख़रीदारों में हूं
तेरी रहमत के लिये शामिल गुनहगारों में हूं
बोल उठी रहमत न घबरा मैं मददगारों में हूं

गुनाह की याद ने पसीने से शराबोर कर दिया

हज़रते उत्बतुल गुलाम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बहुत बड़े वलिय्युल्लाह गुज़रे हैं। एक बार आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه किसी मक़ाम से गुज़रे तो एक मकान के क़रीब खड़े हो गए, रिक़्क़त तारी होने के सबब आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه पसीने से शराबोर थे। किसी ने पूछा : हुज़ूर ! यहां आप की येह हालत कैसे हो गई ? फ़रमाने लगे : एक दौर में इस मकान में मुझ से कोई गुनाह सरज़द हुवा था लिहाज़ा जब भी मैं यहां से गुज़रता हूं तो मुझे अपना वोह गुनाह शिद्दत से याद आता है और मुझे बहुत नदामत होती है इस वज्ह से यहां मेरी येह हालत हुई।

(حلیۃ الاولیاء،6/246،رقم:8471ملخصاً)

ह़ज़रते उ़त्बतुल ग़ुलाम की तौबा

ह़ज़रते उ़त्बतुल गु़लाम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه किसी दौर में बहुत गुनाह किया करते, शराब पीते और दीगर बुराइयों में मुलव्वस रहते थे। इन की इस्लाह़ का सबब क्या हुवा ? इसे दिल के कानों से सुनिये चुनान्चे एक बार ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه किसी इज्तिमाअ़ में बयान फ़रमा रहे थे तो इस दौरान आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने पारह 27 सूरए ह़दीद की आयत नम्बर 16 का येह हि़स्सा तिलावत फ़रमाया :

اَلَمْ یَاْنِ لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَ مَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ ۙ

आसान तरजमए कुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : क्या ईमान वालों के लिये अभी वोह वक़्त नहीं आया कि उन के दिल **अल्लाह** की याद और उस ह़क़ के लिये झुक जाएं जो नाज़िल हुवा है।

ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस आयते करीमा की तफ़्सीर बयान करने लगे, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ज़बान में इस क़दर तासीर थी कि लोग सुन कर रो रहे थे, इतने में एक नौ जवान खड़ा हो गया और कहने लगा : ऐ शैख़ ! अगर मुझ जैसा गुनाहगार भी अपने गुनाहों से तौबा करे तो क्या **अल्लाह** पाक क़बूल फ़रमा लेगा ? ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : हां, **अल्लाह** पाक तेरे गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा देगा। ह़ज़रते उ़त्बतुल ग़ुलाम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه भी वहीं क़रीब बैठे थे, जब इन्हों ने येह सुना तो इन का चेहरा ज़र्द पड़ गया, थरथर कांपने लगे और फिर इन के मुंह से एक ज़ोरदार चीख़ निकली और बेहोश हो कर गिर पड़े। ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अ़रबी ज़बान में चन्द अश्आ़र पढ़े जिन का तरजमा कुछ यूं है :

ऐ **अल्लाह** पाक के ना फ़रमान जवान ! जानता है ना फ़रमानी की सज़ा क्या है ? ना फ़रमानों के लिये पुरशोर जहन्नम है और बरोज़े महशर रब्बे अक्बर की सख़्त नाराज़ी है। गर तू नारे जहन्नम पर राज़ी है तो बेशक गुनाह जारी रख वरना गुनाहों से बाज़ आ जा। तू ने अपने गुनाहों के बदले अपनी जान को रह्न या'नी गिरवी रख दिया है, इस को छुड़ाने की कोशिश कर। ह़ज़रते उ़त्बतुल ग़ुलाम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फिर चीख़ मारी और बेहोश हो गए, जब होश आया तो कहने लगे : ऐ शैख़ ! क्या मुझ जैसे मश्हूरे ज़माना गुनाहगार की भी रब्बे रह़ीम तौबा क़बूल फ़रमा लेगा ? ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : मुआ़फ़ करने वाला परवर्दगार ज़ालिम बन्दे की भी तौबा क़बूल फ़रमा लेता है।

ह़ज़रते उ़त्बतुल ग़ुलाम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने उस वक़्त सर उठा कर **अल्लाह** पाक से तीन दुआ़एं मांगी : ﴾1﴿ ऐ **अल्लाह** ! अगर तू ने मेरे गुनाहों को मुआ़फ़ और मेरी तौबा को क़बूल कर लिया है तो ऐसे ह़ाफ़िज़े और अ़क़्ल से मेरी इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई फ़रमा कि मैं क़ुरआने पाक और उ़लूमे दीनिय्या में से जो कुछ भी सुनूं उसे कभी न भूलूं। ﴾2﴿ ऐ **अल्लाह** ! मुझे ऐसी पुरसोज़ आवाज़ इनायत फ़रमा कि मेरी क़िराअत सुन कर सख़्त से सख़्त दिल भी मोम हो जाए। ﴾3﴿ ऐ **अल्लाह** ! मुझे रिज़्क़े ह़लाल अ़त़ा फ़रमा और ऐसे त़रीक़े से दे जिस का मैं तसव्वुर भी न कर सकूं। **अल्लाह** पाक ने ह़ज़रते उ़त्बतुल ग़ुलाम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की तीनों दुआ़एं क़बूल फ़रमा लीं। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का ह़ाफ़िज़ा बहुत क़वी हो गया, जब आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه क़ुरआने पाक की तिलावत करते तो जो जो सुनता वोह गुनाहों से तौबा कर लेता और आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के घर रोज़ाना एक पियाला शोरबे का और दो रोटियां रिज़्क़े

हलाल से पहुंच जातीं और किसी को पता न चलता कि येह कौन रख जाता है ? हज़रते उत्बतुल गुलाम رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की सारी ज़िन्दगी में ऐसा होता रहा। इस वाक़िए को नक़्ल करने के बा'द हज़रते इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : येह ऐसे शख़्स का हाल है जिस ने **अल्लाह** पाक से लौ लगाई या'नी उस की बारगाह में तौबा की। (مکاشفۃ القلوب، ص28)

गुनाह लिखने वाले नौ जवान पर रहमते इलाही

एक नौ जवान **अल्लाह** पाक से बहुत डरता था और जब भी उस से कोई गुनाह सरज़द होता वोह उसे अपनी डायरी में लिख लेता, एक बार जब उस नौ जवान से कोई गुनाह सरज़द हुवा और उस ने हस्बे मा'मूल अपने उस गुनाह को लिखने के लिये अपनी डायरी खोली तो उस पर पारह 19 सूरए फ़ुरक़ान की आयत नम्बर 70 का येह हिस्सा तहरीर था :

فَاُولٰٓىٕكَ یُبَدِّلُ اللّٰهُ سَیِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍؕ وَ كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِیْمًا۝۷۰

आसान तरजमए कुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : तो ऐसों की बुराइयों को **अल्लाह** नेकियों से बदल देगा और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है। (مکاشفۃ القلوب، ص27)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! झूम जाइये ! **अल्लाह** पाक की रहमत बहुत वसीअ़ है और हम गुनाहगारों के लिये उस की रहमत के दरवाज़े खुले हैं, बस हमें गुनाहों पर शरमिन्दगी और नदामत इख़्तियार करनी है। हमें अपने गुनाहों को याद रखना चाहिये जैसा कि वोह नौ जवान अपने गुनाहों को याद रखने के लिये उन्हें लिख लिया करता था मगर हम गुनाहों को भुलाते और बरसों पहले की जाने वाली नेकियों को याद रखते और वक़्तन फ़ वक़्तन लोगों को बताते हैं। शायद ही कोई हाजी ऐसा हो जिस ने चन्द हज किये हों और उसे उन की ता'दाद याद न हो बल्कि सब याद रखते

और दूसरों को बताते हैं कि हम ने इतने ह़ज और इतने उ़म्रे किये हुए हैं। सिर्फ़ येही नहीं दीगर नेकियों का मुआ़मला भी कुछ इसी त़रह़ का है, जैसा कि बहुत से लोग येह कहते सुनाई देते हैं कि मेरा इतने अ़र्से से दलाइलुल ख़ैरात शरीफ़ पढ़ने का मा'मूल है, साह़िब ! मैं रोज़ाना इतने हज़ार दुरूद शरीफ़ पढ़ता हूं, मैं तो रोज़ाना इतने नवाफ़िल पढ़ता हूं वग़ैरा वग़ैरा। यूं सब अपनी नेकियों की ता'दाद तो याद रखते हैं मगर गुनाहों की ता'दाद याद नहीं रखते बल्कि अगर किसी गुनाह की वज्ह से नदामत हो तो समझते हैं कि येह एक टेन्शन है इसे भुला दिया जाए, इस त़रह़ अपने गुनाहों को भुलाने की फ़िक्र में होते हैं ह़ालां कि उसूल येह है कि बन्दा नेकियां कर के भूल जाए और गुनाह याद रखे क्यूं कि नेकियां याद रखने का फ़ाएदा नहीं बल्कि अगर नेकियां याद रख कर फूलता रहा और दूसरों को बताता रहा तो रियाकारी की सूरत में नुक़्सान हो सकता है जब कि गुनाह याद रखने का फ़ाएदा है कि गुनाह याद रहेगा तो नदामत होती रहेगी, दिल जलता रहेगा और कभी सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ नसीब हो जाएगी। नीज़ अगर गुनाह पर नदामत होती रहेगी और दिल जलता रहेगा तो اِنْ شَآءَ اللہ इस का भी फ़ाएदा होगा, जैसा कि गुनाह लिखने वाले नौ जवान के वाक़िए़ में आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि उस नौ जवान से जब कभी गुनाह हो जाता तो वोह नदामत से उसे अपनी डायरी में लिख लेता जिस का फ़ाएदा येह हुवा कि ख़त़्ते़ क़ुदरत से उस की डायरी में पारह 19 सूरए फ़ुरक़ान की आयत नम्बर 70 का येह ह़िस्सा ﴿فَاُولٰٓئِكَ یُبَدِّلُ اللّٰهُ سَیِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِیْمًا۝۷۰﴾ लिख दिया गया।

इस्यां से कभी हम ने कनारा न किया
पर तू ने दिल आज़ुर्दा हमारा न किया

हम ने तो जहन्नम की बहुत की तज्वीज़
लेकिन तेरी रह़मत ने गवारा न किया

तौबा के बारे में पूछने वाली ख़ातून

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक रात मैं सरकार صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ नमाज़े इशा पढ़ कर बाहर निकला, रास्ते में मुझे एक ख़ातून मिली, उस ने मुझ से पूछा : मैं ने एक गुनाह कर लिया है, क्या मैं तौबा कर सकती हूं ? मैं ने पूछा : तू ने कौन सा गुनाह किया है ? बोली : मैं ने बदकारी की थी और जब उस से बच्चा पैदा हुवा तो मैं ने उसे क़त्ल कर दिया। मैं ने उस से कहा : तू तबाह हो गई और तेरे लिये कोई तौबा नहीं है। वोह औ़रत सदमे से बेहोश हो कर गिर पड़ी और मैं अपनी राह चल दिया। फिर मेरे दिल में ख़याल आया कि मैं ने सरकार صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछे बिग़ैर उस औ़रत को येह बात क्यूं कह दी ? चुनान्चे मैं ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और सारा वाक़िआ़ अ़र्ज़ किया। **अल्लाह** पाक के प्यारे मह़बूब صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : तुम ने बहुत बुरा किया, क्या तुम ने यहे आयत नहीं पढ़ी :

وَالَّذِیْنَ لَا یَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ
(پ19،الفرقان:68)

आसान तरजमए कुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : और वोह जो **अल्लाह** के साथ किसी दूसरे मा'बूद की इ़बादत नहीं करते।

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : जूंही मैं ने येह बात सुनी, मैं उस औ़रत की तलाश में निकल पड़ा और हर एक से पूछने लगा : मुझे उस औ़रत का पता बताओ जिस ने मुझ से मस्अला पूछा था, यहां तक कि उस औ़रत को तलाश करने की वज्ह से बच्चे मुझे पागल समझने लगे, बिल आख़िर मैं ने उस औ़रत को तलाश कर ही लिया और उसे येह आयत सुनाई,

जब मैं ﴿فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ﴾ (پ19، الفرقان:70) **आसान तरजमए कुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान :** "तो ऐसों की बुराइयों को **अल्लाह** नेकियों से बदल देगा" तक सुना चुका तो वोह ख़ुशी से दीवानी हो गई और कहने लगी : मैं ने अपना बाग़ **अल्लाह** पाक और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये बख़्श दिया। (مکاشفۃ القلوب، ص28)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमें **अल्लाह** पाक की रह़मत से मायूस नहीं होना चाहिये, तौबा से हरगिज़ ग़फ़्लत नहीं करनी चाहिये और वक़्तन फ़ वक़्तन तौबा करते रहना चाहिये।

कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी   क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

नेक नमाज़ी बनने का नुस्ख़ा

ख़ौफ़े ख़ुदा व इश्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुसूल के लिये हर हफ़्ते को इशा की नमाज़ के बा'द अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का मदनी मुज़ाकरा देखने सुनने और हर जुमे'रात मग़रिब की नमाज़ के बा'द आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में ब निय्यते सवाब सारी रात गुज़ारने की इल्तिजा है, इशा के बा'द बेशक वहीं आराम फ़रमा लीजिये और **अल्लाह** पाक तौफ़ीक़ दे तो तहज्जुद भी अदा कीजिये, हर माह कम अज़ कम तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरा सफ़र और रोज़ाना ग़ौरो फ़िक्र के ज़रीए़ "नेक आ'माल" नामी रिसाला पुर कर के हर इस्लामी माह की पहली तारीख़ को अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये फ़िक्र मन्द रहने का ज़ेहन बनेगा।

अगले हफ़्ते का रिसाला